❋ 27 अप्रैल 2014 (25-6-77) की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

❋ ज्ञान-

1] बापदादा वा निमित्त बनी हुई आत्माएं जानते हुए भी खुश करने के अर्थ अल्पकाल के लिए, 'हाँजी' का पाठ तो पढ़ लेंगे क्योंकि जानते हैं कि हर आत्मा की सहन शक्ति, सामना करने की शक्ति कहाँ तक है। इस राज़ को जानते हुए नाराज़ नहीं होंगे। उनको और ही आगे बढ़ाने की युक्ति देंगे। राज़ी भी करेंगे, लेकिन राज़ से राज़ी करना और दिल से राज़ी करना– फर्क होता है।

2] पवित्रता ब्राह्मणों का निजी संस्कार है। हद के संस्कार नहीं है। हद की पवित्रता अर्थात् एक जन्म तक की पवित्रता हद का संन्यास है। बेहद के संन्यासियों का जन्म-जन्मान्तर के लिए अपवित्रता का संन्यास है। बापदादा ने पवित्रता के लिए कब समय की सीमा दी थी क्या ?

3] किसी भी बात में हार होने के कारण क्या होता है, वह जानते हो? हार खाने का मूल कारण– स्वयं को बार-बार चेक नहीं करते हो। जो समय प्रति समय युक्तियां मिलती, उनको समय पर यूज़ नहीं करते। इस कारण समय पर हार खा लेते हैं। युक्तियां है, लेकिन समय बीत जाने के बाद, पश्चाताप के रूप में आती– ऐसा होता था तो ऐसे करते....। तो चेकिंग की कमजोरी होने कारण चेन्ज भी नहीं हो सकते। चेकिंग करने का यन्त्र है– दिव्य बुद्धि।

4] देह और देह के साथ पुराने स्वभान, संस्कार वा कमजोरियों से न्यारा होना ही विदेही बनना है।

❋ योग-

1] -----

❋ धारणा-

1] जितना ऑनेस्ट होगा उतना ही होलीएस्ट होगा। होलीएस्ट बनने की मुख्य बात है– बाप से सच्चा बनना। सिर्फ ब्रह्मचर्य धारण करना यह प्यूरिटी की हाइएस्ट स्टेज नहीं है; लेकिन प्यूरिटी अर्थात् रीयल्टी अर्थात् सच्चाई।

2] ऑनेस्ट अर्थात् ईमानदार उसको कहा जाता हैह जो बाप के प्राप्त खजानों को बाप के डायरेक्शन बिना किसी भी कार्य में नहीं लगावे।

3] बाप के आगे स्वयं को प्रत्यक्ष करना सबसे बड़े ते बड़ा सहज चढ़ती कला का साधन है।

4] बाप समान बनना अर्थात् डबल लाईट बनना। दोनों ही लाईट है? वह आकारी रूप में, वह निराकारी रूप में, तो दोनों समान हो ना? समान बनेंगे तो सदा समर्थ और विजयी रहेंगे। समान नहीं तो कभी हार, कमी जीत, इसी हलचल में होंगे।

❋ सेवा-

1] सदा अपने को चलते-फिरते लाईट के कार्ब के अन्दर आकारी फरिश्ते के रूप में अनुभव करते हो? जैसे ब्रह्मा बाप अव्यक्त फरिश्ते के रूप में चारों और सेवा के निमित्त बने हैं, ऐसे बाप समान स्वयं को लाईट स्वरूप आत्मा और लाईट के आकारी स्वरूप फरिश्ते अनुभव करते हो?

2] फरिश्ता अर्थात् ऊंची स्टेज पर रहने वाला। कुछ भी इस देह की दुनिया में होता रहे, लेकिन फरिश्ता ऊपर से साक्षी हो सब पार्ट देखता रहे और सकाश देता रहे। सकाश भी देना है क्योंकि कल्याण के प्रति निमित्त है। साक्षी हो देखते, सकाश अर्थात् सहयोग देना है। सीट से उतर कर सकाश नहीं दी जाती।